सं भो वि०/भ्रम्बाला/187-84/19984 - चूंकि हरियाणा के राज्यपाल की राय है जि मै के के एण्ड कम्पनी, 212, इन्डस्ट्रीयल ऐरिया, पंचकूला, भम्बाला, के श्रमिक श्री सुभाष यादव तथा उसके प्रबन्धकों के मध्य इसमें इसके बाद लिखित मामले में कोई भौदोगिक विवाद है;

भीर चुंकि हरियाणा के राज्यपाल विवाद को न्यायनिर्णय हेतु निर्दिष्ट करना वांधनीय समझते हैं ;

इसलिये, भव, भौद्योगिक विवाद मिधिनियम, 1947 की धारा 10 की उपधारा (1) के खण्ड (य) द्वारा प्रदान की गई शक्तियों का प्रयोग करते हुए, हरियाणा के राज्यपाल इसके द्वारा सरकारी संधित्वना सं० 3(44)-84-3-अम, दिनांक 18 अप्रैल, 1984 द्वारा , उक्त अधिनियम की धारा 7 के अधीन गठित अम न्यायालय, प्रन्वाका को विवादग्रस्त या उससे संबन्धित नीचे लिखा मामला न्यायिन्गय के लिए निर्दिष्ट करते हैं जो कि उक्त प्रबन्धकों तथा श्रीमक के बीच या तो विवादग्रस्त मामला है या विवाद से सुसगत अथवा संबन्धित भामला है :---

भीर चूंकि हरियाणा के राज्यपाल विवाद को न्यायनिर्णय हेतु निर्दिष्ट करना वांछनीय समझते हैं;

इसलिये, श्रब, श्रीद्योगिक विवाद श्रिधिनियम, 1947 की घारा 10 की उपधारा (1) के खण्ड (ग) द्वारा प्रदान की गई शक्तियों का प्रयोग करते हुए, हिरियाणा के राज्यपाल इसके द्वारा सरकारी श्रिधिसूचना सं० 3(44)84—3—श्रम, दिनांक 18 श्रप्रैल, 1984 हैं। उक्त श्रिधिनियम की धारा 7 के श्रिधीन गठित श्रम न्यायालय, श्रम्बाला को विवादग्रस्त या उससे संबंधित नीचे लिखा मामला न्यायनिर्णय के लिए निर्दिष्ट करते हैं, जो कि उक्त प्रबन्धकों तथा श्रमिक के बीच या तो विवाद ग्रस्त मामला है या विवाद से सुसंगत श्रयवा संबंधित मामला है ;

क्या श्री धनपत राय की सेवाफों का समाधान न्यायोचित तथा ठीक है? यदि नहीं, तो वह किस राहत का हकदार है?

दिनांक 23 मप्रैल, 1985

सं० ग्रो॰ वि॰/पानीपत/43-85/17918.--चूंकि हरियाणा के राज्यपाल की राय है कि दो करनाल डिस्ट्रिक्ट कोग्रापरेटिव मिल्क प्रोडय्सर यूनियन लि॰, करनाल, के श्रमिक श्री महावीर सिंह तथा उसके प्रबन्धकों के मध्य इसमें इसके बाद लिखित भामले में कोई ग्रोद्योगिक विवाद है;

भौर चूंकि हरियाणा के राज्यपाल विवाद को न्यायनिर्णय हेतु निर्दिष्ट करना वाछनीय समझते हैं ;

इसलिए, श्रव, भौद्योगिक विवाद श्रवितियम, 1947 की घारा 10 की उपधारा (1) के खण्ड (ग) द्वारा प्रदान की गई शक्तियों का प्रयोग करते हुए, हरियाणा के राज्यपाल इसके द्वारा सरकारी अधिसूचना सं० 3 (44) 84—3—श्रम, दिनांक 18 भन्नेल, 1984 द्वारा उक्त भिवित्यम की घारा 7 के भधीन गठित श्रम न्यायालयं, श्रुभम्बाला को विवादग्रस्त या उससे संबंधित नीचे लिखा मामला न्याय-निणय हेतु निर्दिष्ट करते हैं जो कि उक्त प्रबन्धकों तथा श्रमिक के बीच या हुतो निवयदग्रस्त मामला है या विवाद से सुसंगत हु भयवा संबंधित मामला है :—

क्या श्री महावीर सिंह की सेवाओं का समाधान न्यायोचित तथा ठीक है ? यदि नहीं, तो वह किस राहत का हकदार है ? सं. घो. वि./फरीदाबाद/21-85/17924 ---चूंकि हरियाणा के राज्यपाल की राय है कि मैं क्साईटीन इलैक्ट्रीकल (इंडिया), 43, इन्डस्ट्रीयल एरिया, एन. आई. टी., फ़रीदाबाद, के श्रीमक श्री, याद राम तथा उसके प्रवन्धकों के मध्य इसमें इसके बाद लिखित आमसे में कोई शीढोणिक विवाद है;

भीर चूंकि हरियाणा के राज्यपाल विवाद को स्यायनिर्णय हुत् निर्दिष्ट करना बांछनीय समझते हैं;

इसलिए, श्रव, श्रीश्रोगिक विवाद श्रविनियम, 1947, की धारा 10 की उपधारा (1) के खण्ड (ग) द्वारा प्रदान की गई शक्तियों का प्रयोग करते हुए, हरियाणा के राज्यपास इसके द्वारा सरकारी श्रीक्ष्मभना सं 5415-3-श्रम/68/15254, विनास 20 जून, 1968, चित्र मुद्दे हुए समिसूबना है 11495-जी-जम-88 नम/57/11345, दिनांक ने परवर्षी, 1958, दारा उंक्त समितियम की सारा 7 के अमैंनि बंदित नाम न्यायालय, परीदावाद, को निवादमस्त या उत्तरे सुमंगत या उत्तरे सम्बन्धित तीचे लिया मामला न्यायितमेय के सिप् विदिक्त करते हैं, जो कि प्रबन्धकों तथा श्रीमक्ष के बीच या तो निवादमस्त कामला है या निवाद से सुसंगत प्रथमा इसीक्षत मामला है:---

क्या भी याद राम की सेवाओं का समापन न्यायोजित तथा ठीक है ? यदि नहीं, तो वह किस राहत का हंबदार है ?

तं. भो. वि./पानीपत/22-85/17931 ---चूंति हिंदियाणा के राज्यपाल की राय है कि में. दो मलौर कोभापरेटिव सोसाईटी लि., भलौर तहसील पानीपत जिला करनाल, के श्रीमक श्री श्रीम प्रकाण तथा उउके प्रबन्धकों के मध्य इसमें इसके वाद लिखित मामलें में कोई भोदोगिक विवाद है;

भौर चूंकि हरियाणा के राज्यपाल विवाद को न्यायनिर्णय हेतु निर्दिष्ट करना वांछनीय समझ ते हैं;

इसलिये, मन, मौद्योगिक विवाद मिश्विनियम, 1947 की घारा 10 की उपधारा (1) के खण्ड (ग) द्वारा प्रदान की गई कित्तियों का प्रयोग करते हुए, हरियाणा के राज्यपाल इसके द्वारा सरकारी अधिसूचना सं. 3(44)-84-3-अम, दिनांक 18 अप्रैल, 1984 द्वारा उक्त अधिनियम की घारा 7 के अधीन गठित अम न्यायालय. अम्बाला को विवादग्रस्त या उससे सम्बन्धित नीचे लिखा मामला न्यायनिर्णय के लिये निर्दिष्ट करते हैं, जो कि उक्त प्रबन्धकों तथा अभिक के बीच या तो विवादग्रस्त मामला है बा विवाद से सुसंगत अबवा संबंधित मामला है :---

क्या श्री भ्रोम प्रकाश की सेवाभ्रों का समापन त्यायोजित तथा ठीक है? यदि नहीं तो वह किस राहत का हकदार है?

सं. भो.वि./फ़रीदानाद/57-85/17937.—चूंकि हरियाणा के राज्यपाल की राय है कि मैं. ठेकेंदार हरि चौधरी मार्फत मैं ० फिजा डिक्स प्रा० लि॰ मयुरा रोड, फरीदाबाद, (2) मैं० पित डिक्स प्रा० लि॰ मयुरा रोड, फरीदाबाद, के श्रीमक श्री भरत प्रसाद तथा उसके अवस्थाओं के मध्य इसमें इसके बाद लिखित मामलेमें कोई श्रीक्षोपिक विवाद है;

भीर चूंकि हरियाचा के राज्यपाल विवाद को त्यायनिर्णय हेतु निर्विष्ट करका बांधनीय समझते हैं 🕫

इस लिए, प्रज, भौ शोगिक विवाद अधिनियम, 1947 की धारा 10 को उपधारा (1) के खण्ड (ग) द्वारा प्रवान की गई सक्तियों का प्रयोग करते हुए, हरियाणा के राज्यपाल इसके द्वारा सरकारी अधिसूचना सं. 5415-3-अम-68/15254, विनांक 20 जून, 1953, के साथ पढ़ते हुए अधिसूचना सं. 11495-जी-अम-88-अम/57/11245, विनांक 7 फरवरी, 1958, द्वारा उक्त अधिनियम की धारा 7 के अधीन गठिस अम ग्यायासय, फरीदाबाद को विवादप्रस्त या उससे सुसंगत या उससे सम्यन्धित नीचे (लिखा मामला न्यायनिर्णय के लिए निर्दिष्ट करते हैं, जो कि उक्त प्रवत्सकों तथा अभिक के बीच या तो विवादप्रस्त मामला है या विवाद से सुसंगत अथवा सम्यन्धित भामला है:—

क्या भी भरत प्रसाद की सेवाओं का समापन न्यामोचित तथा ठीक है ? यदि नहीं, तो वह किस राहत का हकदार है 🕽

दिनांक 24 अप्रैल, 1985

सं. मो.वि./हिसार/17-85/18185.—चूँकि हरियाणा के राज्यपाल की राय है कि मै० दो डबवाली प्राईमरी लैन्ड डिवैल्पमैन्ट वेंस लि., डबवाली, के श्रमिक श्री सुखदेव राज तथा उसके प्रवश्वकों के मीच इसमें इसके बाद लिखित मामने में कोई मीधोगिक विवाद है;

भीर चूंकि हरियाणा के राज्यपाल विवाद को स्थायनिर्णय हेतु निर्दिष्ट करना वांछनीय समझते हैं;

इसलिए, भन भौद्योगिक विवाद अधिनियम, 1947, की धारा 10 की उपधारा (1) के खण्ड (ग) द्वारा प्रदान की गई गिक्सियों का प्रयोग करते हुये, हरियाणा के राज्यपाल इसके द्वारा सरकारी अधिसूचना सं. 9641- श्रम/70/32573, दिनांक 6 नवम्बर, 1970 के साथ गठित सरकारी अधिसूचना सं. 3864-ए-एस.भो. (ई)श्रम-70/1348, दिनांक 8 मई, 1970 द्वारा उन्त प्रधिनियम की धारा 7 के अधीन गठित श्रम न्यायालम, रोहतक, को विवादग्रस्त या उससे सुसंगत या उससे सम्बन्धित नीचे निखा जामेला न्यायनिर्णय हेतु निर्दिष्ट करते हैं, जो कि उनस प्रयासकों तथा श्रमिक के बीच या तो विवादग्रस्त मामला है या उन्त विवाद से सुसंगत या संबंधित मामला है:—

क्या श्री सुखदेय राज की सेवाओं का समापन न्यायोचित तथा ठीक है? यदि नहीं, तो वह किस राहत का हकदार है?